रू-ब-रू एक जुझारू मजदूर से

आप हैं कॉमरेड सुभाष. पड़ौस की मज़दूर बस्ती में रहते हैं. 12 वीं तक पढ़े हैं. पढ़ने में अच्छे थे लेकिन ज़िन्दगी की ज़द्दोज़हद ने आगे पढ़ने की इज़ाज़त नहीं दी. कॉमरेड सुभाष की दिनचर्या सर्दियों में 6 बजे और गर्मियों में 5 बजे शुरू होती है.

सबसे पहले, वे पड़ौस की एक हाउसिंग सोसायटी में गाड़ियों की सफ़ाई करते हैं. उसके बाद घर के लिए पानी की व्यवस्था करते हैं. पहले वे, उसी सोसिएटी से पानी ले लेते थे, लेकिन फिर उस टटपूंजिया क्लास सोसायटी की टटपूंजिया प्रबंधन कमेटी ने हुक्म सुनाया- सोसायटी का पानी मज़दूरों के निजी इस्तेमाल के लिए नहीं है. एक पानी व्यवसायी, उस झुग्गी में सुबह टैंकर से पानी बेचता है. इसलिए, अब उन्हें पानी की लाइन में लगकर पानी लेना होता है. उसके बाद 9 बजे वे खाना खाते हैं जिसे ब्रेकफास्ट-सह-लंच समझा जाए. उसके बाद वे दो कोठियों में जाकर कपड़े धोते हैं. लगभग 1 बजे, वे सड़क किनारे कपड़े स्त्री करने के ठेले पर, अपने बूढ़े पिताजी के साथ कपड़े स्त्री कर, घर-घर जाकर देकर आते हैं. उनका समय 8 से 9 बजे रात के बीच समाप्त होता है.

कॉमरेड सुभाष ने अपने दिन के काम का पुनर्प्रबंधन किया है. वृहस्पतिवार को गाड़ियाँ साफ़ करने की छुट्टी रहती है. उन्होंने तय किया है कि उस दिन वे 3 घंटे, अपने संगठन, 'क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा' को देंगे. उसके अलावा भी, किसी एक दिन 2 घंटे संगठन के काम को देंगे, लेकिन दिन वे खुद तय करेंगे. साथ ही, किसी भी सामूहिक सांगठनिक मोर्चे-प्रदर्शन में तो वे शामिल रहते ही हैं, भले काम का नुकसान हो. पिछले वृहस्पतिवार को अनखीर लेबर चौक जाते वक़्त उन्होंने अपनी एक दास्ताँ मुझसे शेयर की थी जो मेरे ज़हन में गुद गई. 12 कक्षा में साथ पढ़ने वाले हम 5 दोस्त हैं. आज भी हम मिलते-रहते हैं. वे मुझे बुलाते हैं. पिछले साल हम मिलकर मनाली घूमने गए थे. सबने पांच-पांच हज़ार रुपये जमा किए थे लेकिन उन्होंने मुझसे कहा, तू तीन हज़ार ही दे देना. मैं उसकी वज़ह समझ गया. दो हज़ार रुपये तो बच गए लेकिन मुझे अच्छा नहीं लगा. इसके बाद भी ऐसा ही एक प्रोग्राम बना लेकिन मैंने मना कर दिया. कॉमरेड सुभाष में मुझे गोर्की के पावेल की छवि नज़र आती है. साथियो, समाज की विकास यात्रा में, एक ऐतिहासिक घड़ी आती है, जब धीरे धीरे, थोड़ा-थोड़ा, अपनी गति से बदलता समाज, छलांग लेकर एक नए, उन्नत समाज में बदल जाता है. उस तारीखी वक़्त में अत्याधिक ऊर्जा की दरक़ार होती है. हम सौभाग्यशाली हैं कि हम उस घड़ी में जी रहे हैं. अपने संगठन के लिए वक़्त निकालिए.

-सत्यवीर सिंह

Paytm

MM

Majdoor Morcha

UPI ID: 8851091460@paytm

8851091460

Scan this QR or send money to 8851091460 from any app. Money will reach in Majdoor Morcha's bank account.

केवल पाठकों के दम पर चलने वाले इस अखबार को सहयोग देकर अपनी आवाज को बुलंद रखें।

मज़दूर मोर्चा- खाता संख्या- 451102010004150

IFSC Code : UBIN0545112

Union Bank of India, Sector-7, Faridabad

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लबगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड।
2. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
3. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे।
4. जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207
5. मोती पाहुजा - मिनार गेट पलवल, 9255029919
6. सुरेन्द्र बघेल-बस अड्डा होडल - 9991742421

बल्लभगढ़ विधानसभा क्षेत्र में आसान नहीं डगर पुराने नेताओं की टिकट मिलने की

बल्लभगढ़ (विकास भारत शर्मा) किसी भी पार्टी के कार्यकर्ता का सपना होता है विधायक बनने का व विधायक का सपना होता है मंत्री बनने का और हमेशा के लिए इसी पद पर रहने का। यदि पिछले चुनाव पर नजर डालें तो यह बात सही दिखाई देती है कि वर्तमान में कैबिनेट मंत्री मूलचंद शर्मा पिछली बार विधायक बने व इस बार विधायक बन मंत्री पद पर विराजमान हुए। पहले कार्यकाल में मोदी लहर का बहुत बड़ा योगदान उनकी जीत में रहा था। दूसरी बार वे टिकट लेने में कामयाब हुए व ब्राह्मण कोटे से मंत्री बने। पिछले चुनाव में कांग्रेस ने दूसरी विधानसभा का उम्मीदवार यहां भेजा लेकिन वह कांग्रेस के परंपरागत वोट को लेने में ही सफल हो पाए। जबकि पहली बार विधानसभा चुनाव लड़ने वाले एक निर्दलीय उम्मीदवार ने अठारह हजार से अधिक मत लेकर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। कैबिनेट मंत्री मूलचंद शर्मा इस वोट का जिक्र कई बार मंच से कर चुके हैं।

निर्दलीय उम्मीदवार का इतना अधिक मत ले जाना कहीं कैबिनेट मंत्री की घटती लोकप्रियता को तो नहीं दर्शाता है? पूर्व विधायक शारदा राठौर के चुनाव न लड़ने का फायदा भी मूलचंद शर्मा को हुआ क्योंकि शारदा उस समय भाजपा मे थी व दूसरी विधानसभा से टिकट की दावेदारी

शारदा राठौर

कर रही थी फिलहाल अब शारदा राठौर कांग्रेस में है। वह बल्लभगढ़ विधानसभा में ज्यादा सक्रिय हो रही है। राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि शारदा के पार्टी बदलने से उनके राजनीतिक भविष्य पर फर्क पड़ सकता है। राजनीतिक पंडितों का मानना है कि वोटरों का शारदा पर विश्वास कम हुआ है। वर्तमान में बल्लभगढ़ विधानसभा की स्थिति देखते हैं तो उसमें कांग्रेस व भाजपा की टिकट मांगने वाले कई दावेदार हैं। कांग्रेस के तो दावेदार स्पष्ट दिखाई दे रहे है। कांग्रेस में तो अलग अलग गुट के नेता आलाकमान के सामने अपनी टिकट की दावेदारी प्रस्तुत करेंगे। लेकिन भाजपा में अभी टिकट मांगने वाले गुमनाम हैं जो आने वाले चुनावों में एकाएक टिकट की दावेदारी करने आलाकमान के सामने आएंगे। क्योंकि अभी पार्टी के शासन में होने के कारण मलाई खाने में मस्त हैं व अपनी दावेदारी नहीं दिखा रहे हैं।

भाजपा व कांग्रेस अपने पुराने नेताओं को छोड़कर नए नेताओं पर दाव लगा सकते हैं दोनों पार्टियों में पुराने नेता कई साल सत्ता का सुख भोग कर काफी बदनाम हो चुके हैं। दोनों पार्टियों में कई नेता जमीनी धरातल पर कार्य कर रहे हैं। प्रदेश में कांग्रेस की स्थिति पहले से अधिक मजबूत है। पिछले चुनावों में भाजपा ने 75 पार का नारा दिया था लेकिन वह अपने बलबूते पर सरकार नहीं बना सकी।

बल्लबगढ़ विधानसभा में कांग्रेस टिकट के दावेदार बहुत हैं। क्योंकि कार्यकर्ताओं को लगता है कि हवा उनके पक्ष में है। कांग्रेस व भाजपा में पुराने नेताओं की टिकट में कई युवा नेता रोड़े बन सकते हैं व अपनी दावेदारी दिखा सकते है। जनता भी बार-बार पुराने नेताओं को देखना पसंद नहीं करती है और चाहती है कि किसी दूसरे नेता को आगे बढ़ने का मौका मिलना चाहिए। कांग्रेस व भाजपा को यदि पुराने नेताओं के अलावा कोई भारी नेता नहीं मिलता है तो वह दूसरी विधानसभा से जिताऊ उम्मीदवार को ला सकती है। बल्लभगढ़ विधानसभा में मुकाबला मुख्यत: कांग्रेस व भाजपा के बीच होना दिख रहा है।

मुख्य सचिव के आदेश के बावजूद शिक्षा विभाग में बायोमेट्रिक हाजिरी नहीं लगती

फरीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) सरकारी स्कूलों व दफ्तरों में कर्मचारियों की गैरहाजिर रहने की बढ़ती प्रवृति को थामने के लिये सन् 2017 में बायोमेट्रिक हाजिरी लगाने के आदेश मुख्य सचिव द्वारा जारी किये गये थे। इस प्रणाली में ड्यूटी पर आने वाले कर्मचारी को निश्चित समय पर आने व जाने के समय अपने अंगूठे से इस उपकरण को छूना होता है।

कुछ समय तक तो यह प्रणाली प्रत्येक कार्य स्थल पर पहुंच ही नहीं पाई। धीरे-धीरे पहुंची भी तो कोरोना महामारी आ गई। इस दौरान इस प्रणाली को रोक दिया गया। अब बीते दो साल से इस प्रणाली को चालू करने के आदेश बार-बार मुख्य सचिव द्वारा जारी किये जाने के बावजूद कोई अमल नहीं हो रहा। शिक्षा विभाग में इस प्रवृति को कुछ ज्यादा ही देखा जा रहा है। स्कूल में देर से आने तथा समय से पहले भाग जाने की बढ़ती शिकायतों के चलते मुख्य सचिव ने इस माह फ़िर से इस प्रणाली को लागू करने के आदेश जारी किये। लेकिन इसका कोई असर धरातल पर देखने को नहीं मिल रहा। यदि मुख्य सचिव अपने आदेशों की पालना ही नहीं करा सकते तो कम से कम ऐसे आदेश जारी करके पद की मिट्टी तो पलीद न करायें।

संदर्भवश, पूर्व ज़िला शिक्षा अधिकारी ऋतु चौधरी ने अपने कार्यालय में, जहां वे खुद भी बायोमेट्रिक हाजिरी लगाती थीं तथा तमाम स्कूलों में इस प्रणाली को पूरी सख्ती से लागू करा दिया था। उनकी इस सख्ती के विरोध में कुछ निहित स्वार्थी लोगों ने विरोध के झंडे इतने बुलंद कर दिये कि उन्हें न केवल इस पद से वंचित होना पड़ा बल्कि उनके विरुद्ध तरह-तरह के झूठे आरोपों पर आधारित इन्क्वायरियां शुरू करा दी। उनके जाने के बाद अब वे सब लोग अति प्रसन्न हैं जिन्हें न समय पर आना होता है न समय पर जाना होता है।